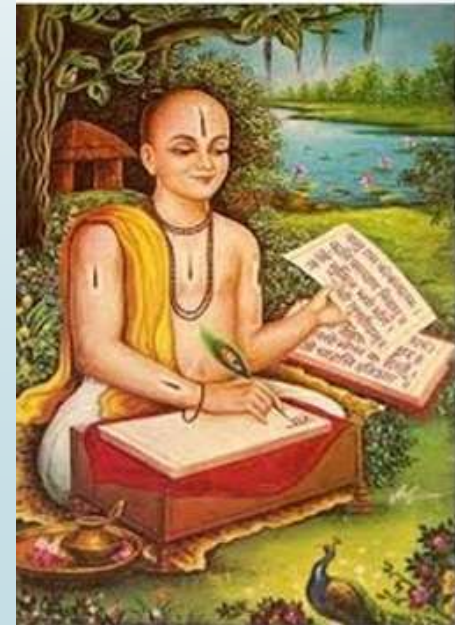


वन के मार्ग में



तुलसीदास जी



मुख्य बिंदु

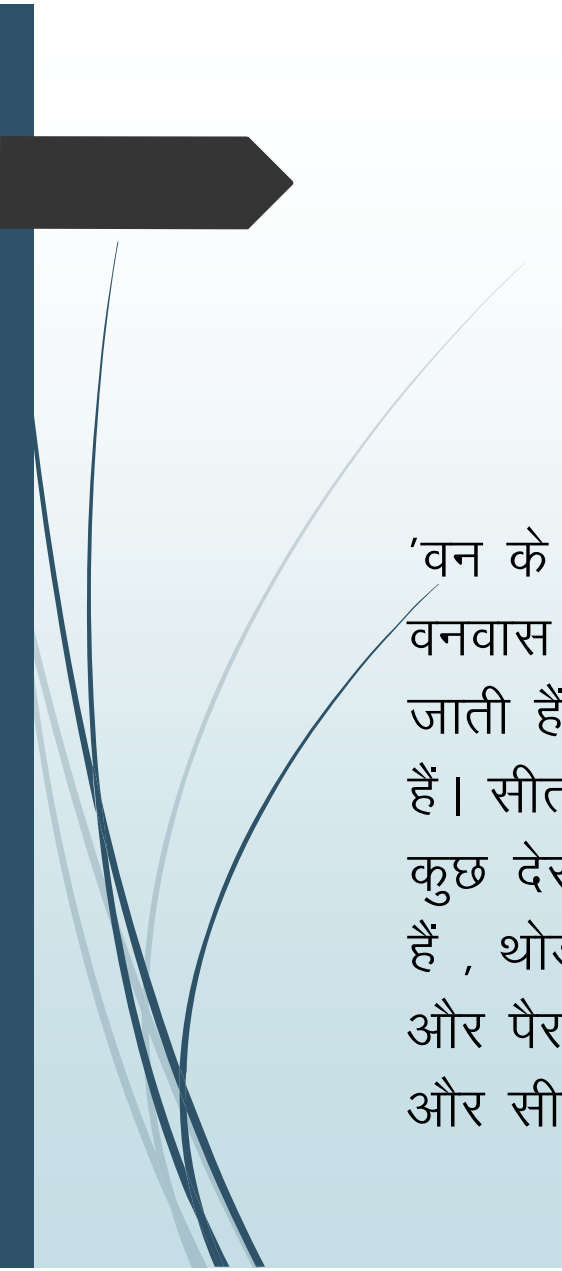
अवधी भाषा में लिखा गया सवैया है।

अयोध्या कांड का दृश्य लिया गया है।

राम—सीता के प्रेम को दर्शाया गया है।

जहाँ सीता की व्याकुलता देखकर राम की शीतल
आँखों से आँसू बहने लगे।

राम के प्रेम को देखकर सीता का मन पुलकित हो
जाता है और आँखों से आँसू बहने लगे।



पाठ का सार

‘वन के मार्ग में’ सवैया अयोध्या कांड से संबंधित है जिसे तुलसीदास जी ने लिखा है। वनवास के लिये राम—सीता और लक्ष्मण महल से निकलते हैं। सीता अभी कुछ ही दूर जाती हैं उनके माथे पर पसीने की बूंदें आ जाती हैं और उनके मधुर होंठ सूख जाते हैं। सीता की ये दशा देखकर श्रीराम की आँखों में आँसू आ जाते हैं। कुछ देर आराम की इच्छा के कारण सीता राम से कहती हैं कि लक्ष्मण जल लेने गए हैं, थोड़ी देर पेड़ के नीचे विश्राम करना चाहिए। सीता छाये में राम को हवा करती हैं और पैर की धूल साफ करती हैं। राम भी सीता के पैरों से कंटक निकालते हैं। राम और सीता दोनों एक—दूसरे के प्रेम में अनुरक्त हैं, प्रेम से दोनों की आँखें गीली हैं।